Regd. With the Registrar of News Papers of India at PUN BIL/2002/07848
Postal Reg. No. GDP-41/2017-19

मासिक

मजिल्स अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

जुलाई/2020 ई०

Annual Subscription: Rs. 210/- (Per Issue: Rs. 20/-
(Weight : 50-100, grms / Issue)

तिथि 21 जून 2020 ई. मज्लिस अन्सारुल्लाह कडलाई केरला द्वारा आयोजित वक़ार-ए-अम्ल में क़ब्रस्तान की सफ़ाई का दृश्य।

तिथि 21 जून 2020 ई. मज्लिस अन्सारुल्लाह कडलाई केरला द्वारा आयोजित वक़ार-ए-अम्ल में सड़क की सफ़ाई का दृश्य।

मज्लिस अन्सारुल्लाह कम्बलक्काड केरला के सदस्य घरों में पीने हेतु स्वच्छ जल वितरण करते हुए।

मज्लिस अन्सारुल्लाह कम्बलक्काड केरला के सदस्य निर्धन लोगों के घरों में सब्ज़ीयां वितरण करते हुए।

15 जून 2020 ई. मज्लिस अन्सारुल्लाह जमशेदपुर द्वारा हस्पताल में मरीज़ों को भेंट की जाने वाली सामग्री के पैकेट।

15 जून 2020 ई. मज्लिस अन्सारुल्लाह जमशेदपुर के सदस्य हस्पताल में मरीज़ों को खाने-पीने की सामग्री भेंट करते हुए।

15 जून 2020 ई. मज्लिस अन्सारुल्लाह जमशेदपुर के सदस्य हस्पताल में मरीज़ों को भेंट की जाने वाली सामग्री के पैकेट तैयार करते हुए।

मज्लिस अन्सारुल्लाह इब्राहीमपूर बंगाल द्वारा आयोजित वक़ार-ए-अम्ल का दृश्य।

मज्लिस अन्सारुल्लाह इब्राहीमपूर बंगाल द्वारा आयोजित वक़ार-ए-अम्ल का दृश्य।

मज्लिस अन्सारुल्लाह मैलारम (ज़िला वारंगल) द्वारा आयोजित तर्बियती इजलास का दृश्य।

बِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا کُوۡنُوۡۤا اَنۡصَارَ اللّٰهِ
سورۃ الصف آیت ۱۵

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 18	जुलाई 2020	Issue - 7

निगरान
अताउल मुजीब लोन

सम्पादक
सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक
शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री
09915379255

मैनेजर
मक्सूद अहमद भट्टी
Ph. +91 84272 63701

कम्पोज़िंग
तसनीम अहमद बट्ट

प्रैस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रैस
क़ादियान

वार्षिक मूल्य : 210 ₹
विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान - 143516
ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186

विषय सूची	पृष्ठ
दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश	3
सम्पादकीय - अन्धेरे गहरे होते चले जा रहे हैं	4
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन - क़ुरआन करीम की शिक्षाओं को प्रचलित करना अन्सारुल्लाह की ज़िम्मेदारी	6
वर्तमान वैश्विक संकट और महामारियों की वास्तविकता- एक समीक्षा	9

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم दर्सुल क़ुर्आन

وَ اِنَّهٗ لَتَنْزِيْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۹۳﴾ نَزَلَ بِهِ الرُّوْحُ الْاَمِيْنُ ﴿۱۹۴﴾ عَلٰى قَلْبِكَ لِتَكُوْنَ مِنَ
الْمُنْذِرِيْنَ ﴿۱۹۵﴾ بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُّبِيْنٍ ﴿۱۹۶﴾ وَ اِنَّهٗ لَفِيْ زُبُرِ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۱۹۷﴾ اَوَ لَمْ يَكُنْ لَّهُمْ اٰيَةً اَنْ
يَّعْلَمَهٗ عُلَمٰٓؤُا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿۱۹۸﴾ وَ لَوْ نَزَّلْنٰهُ عَلٰى بَعْضِ الْاَعْجَمِيْنَ ﴿۱۹۹﴾ فَقَرَاَهٗ عَلَيْهِمْ مَّا
كَانُوْا بِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ﴿۲۰۰﴾ (सूर: अल- आराफ: आयत 31-32)

अनुवाद - अनुवाद और निसन्देह यह (क़ुरआन) रब्बुल आलमीन ख़ुदा की तरफ़ से उतारा गया है। इस को लेकर एक अमानतदार कलाम लाने वाला फ़रिश्ता (जिब्राईल) तेरे दिल पर उतरा है। ताकि तू होशियार करने वाली जमाअत में शामिल हो जाए। (इस को जिब्राईल ने ख़ुदा के आदेश से) खोल कर वर्णन करने वाली अरबी भाषा में उतारा है। और निसन्देह इस का वर्णन पहली किताबों में भी मौजूद था। क्या उनके लिए यह चिन्ह कम है कि इस (क़ुरआन) को बनी इस्राईल के उल्मा भी पहचानते हैं। और अगर हम इस को आजमियों में से किसी पर उतारते। और वह इस को इन (कुफ़्फ़ार) के सामने पढ़ कर सुनाता तो वे कभी भी इस पर ईमान न लाते

दर्सुल हदीस

عَنْ زَيْدِ بْنِ اَرْقَمَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا، قَالَا قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "إِنِّيْ تَارِكٌ فِيْكُمْ مَا إِنْ تَمَسَّكْتُمْ بِهٖ لَنْ تَضِلُّوْا بَعْدِيْ، اَحَدُهُمَا اَعْظَمُ مِنَ الْآخَرِ، كِتَابُ اللهِ حَبْلٌ مَمْدُوْدٌ مِنَ السَّمَآءِ إِلَى الْاَرْضِ، وَعِتْرَتِيْ اَهْلُ بَيْتِيْ، وَلَنْ يَّتَفَرَّقَا حَتّٰى يَرِدَا عَلَيَّ الْحَوْضَ، فَانْظُرُوْا كَيْفَ تَخْلُفُوْنِيْ فِيْهِمَا

अनुवाद - अनुवाद: ज़ैद बिन अर्क़म रज़ी अल्लाह अन्हुमा कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "मैं तुम में ऐसी चीज़ छोड़ने वाला हूँ कि अगर तुम उसे पकड़े रहोगे तो हरगिज़ गुमराह न होगे उनमें से एक दूसरे से बड़ी है और वह अल्लाह की किताब है मानो वह एक रस्सी है जो आसमान से ज़मीन तक लटकी हुई है, और दूसरी मेरी इतरत अर्थात मेरे अहले बैअत हैं ये दोनों हरगिज़ जुदा न होंगे, यहां तक कि ये दोनों हौज़ कौसर पर मेरे पास आएँगे, तो तुम देख लू कि इन दोनों के सिलसिला में तुम मेरी कैसी जानिशानी कर रहे हो।

(सुनन तिर्मिज़ी,किताब फ़ज़ाइल व मनाक़िब,बाब अहले बैअत के मनाक़िब का वर्णन)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

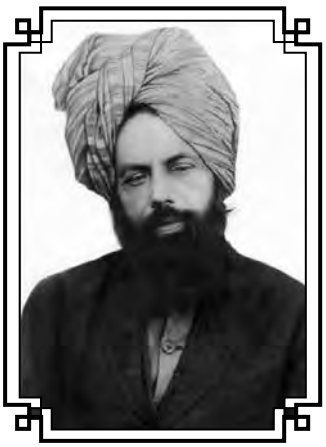

क़ुरआन की हिदायत के विरुद्ध एक क़दम न उठाऊ

"क़ुरआन शरीफ़ अपनी रुहानी विशेषता और अपनी व्यक्तिगत रोशनी से अपने सच्चे अनुयायियों को अपनी तरफ़ खींचता है और इस के दिल को मुनव्वर करता है और फिर बड़े बड़े निशान दिखला कर ख़ुदा से ऐसे सुदृढ़ सम्बन्ध प्रदान करता है कि वह ऐसी तलवार से भी टूट नहीं सकते जो टुकड़ा टुकड़ा करना चाहती है। वह दिल की आँख खोलता है और गुनाह के गन्दे स्रोत को बंद करता है और ख़ुदा के आनन्ददायक वार्तालाप से सम्मान प्रदान है और परोक्ष का ज्ञान प्रदान करता है और दुआ स्वीकार करने पर अपने कलाम से सूचना देता है। और हर एक जो इस व्यक्ति से मुक़ाबला करे जो क़ुरआन शरीफ़ का सच्चा अनुयायी है, ख़ुदा अपने भयावह निशानों के साथ इस पर प्रकट कर देता है कि वह इस बन्दा के साथ है जो उस के कलाम का अनुकरण करता है। "

(चश्मा मअरफ़त रुहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 308-309)

"अत: तुम सावधान रहो। ख़ुदा की शिक्षा और क़ुर्आन के पथ-प्रदर्शन के विपरीत एक पग भी न उठाओ। मैं तुम्हें सच-सच कहता हूं कि जो मनुष्य क़ुर्आन के सात सौ आदेशों में से एक छोटे से आदेश को भी टालता है वह मुक्ति द्वार को स्वयं अपने लिए बंद करता है। वास्तविक और पूर्ण मुक्ति के मार्ग क़ुर्आन ने प्रदर्शित किए, शेष सभी उसकी तुलना में छाया मात्र थे। अत: तुम क़ुर्आन का पूरी सतर्कता से अध्ययन करो और उससे अत्यधिक प्रेम करो, ऐसा प्रेम जो तुम ने किसी से न किया हो। क्योंकि जैसा ख़ुदा ने मुझे संबोधित करते हुए फ़रमाया-اَلْخَيْرُ كُلُّهٗ فِي الْقُرْاٰنِ "अलख़ैरो कुल्लुहू फ़िलक़ुर्आन" कि समस्त प्रकार की भलाइयां क़ुर्आन में हैं। यही बात सत्य है। खेद है उन लोगों पर जो किसी अन्य वस्तु को उस पर प्राथमिकता देते हैं। तुम्हारी सम्पूर्ण सफलता और मुक्ति का स्रोत क़ुर्आन में निहित है। तुम्हारी कोई भी धार्मिक आवश्यकता ऐसी नहीं जिसका समाधान क़ुर्आन में न हो। प्रलय के दिन तुम्हारे ईमान के सच्चे या झूठे होने की कसौटी क़ुर्आन है। आकाश के नीचे क़ुर्आन के अतिरिक्त और कोई पुस्तक नहीं जो किसी अन्य पर निर्भर हुए बिना तुम्हारा पथ-प्रदर्शन कर सके। ख़ुदा ने तुम पर आपार कृपा की है जो क़ुर्आन जैसी पुस्तक तुम्हें प्रदान की। मैं तुम्हें सच-सच कहता हूं कि वह पुस्तक जो तुम्हारे सम्मुख पढ़ी गई यदि ईसाइयों के सम्मुख पढ़ी जाती तो वे तबाह न होते। यह उपकार और पथ-प्रदर्शन जो तुम्हें उपलब्ध किया गया यदि (तौरात) को छोड़ कर यहूदियों को उपलब्ध कराया जाता तो उनके कुछ समूह प्रलय का इन्कार न करते। अत: इस उपकार के महत्त्व को समझो जो तुम्हारे साथ किया गया। यह अति उत्तम उपकार है यह अपार संपत्ति है। यदि क़ुर्आन न आता तो समस्त संसार एक अपवित्र और तुच्छ लोथड़े की भांति था। क़ुर्आन वह पुस्तक है जिसके समक्ष सभी पथ-प्रदर्शन तुच्छ हैं।"

(कुश्ती नूह रुहानी ख़ज़ाइन भाग 19 पृष्ठ 26-27)

सम्पादकीय

अंधेरे गहरे होते चले जा रहे हैं

यह वास्तविकता है कि रोशनी और अंधेरा बराबर नहीं हो सकते। रोशनी सफलता और अंधेरा असफलता की निशीनी है। इसी लिए फ़ितरी तौर पर हर इन्सान रोशनी का इच्छुक और अंधेरे से दूर रहता है। अल्लाह तआला क़ुरआन करीम में फ़रमाता है।

اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۙ يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْلِيٰٓـُٔهُمُ الطَّاغُوْتُ ۙ يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ اِلَى الظُّلُمٰتِ

(अलबकर 257) अर्थात अल्लाह उन लोगों का दोस्त है जो ईमान लाते हैं। वो उन्हें अंधेरों से निकाल कर रोशनी की तरफ़ लाता है और जो काफ़िर हैं उनके दोस्त नेकी से रोकने वाले (लोग हैं। वो उन्हें रोशनी से निकाल कर अंधेरों की तरफ़ ले जाते हैं

अत: वह तरीक़ा जो नेकी की तरफ़ ले जाए वह नूर है और जो नेकी से रोके वह अन्धेरा है। क़ुरआन करीम में विभिन्न अन्धेरों का ज़िक्र पाया जाता है। आस्थाओं तथा विचारों के अन्धेरे, रस्मों तथा तरीकों के अन्धेरे, सभ्यताओं तथा समाजों के अन्धेरे, सियासत के अन्धेरे। सार यह कि ज़िन्दगी के हर विभाग के अन्धेरे से क़ुरआन करीम के माध्यम से अल्लाह तआला इन्सान को रोशनी की तरफ़ लाता है। दूसरों पर ज़ुल्म करना भी सख़्त अन्धेरा है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़ुल्म से बचने की बहुत नसीहत फ़रमाई है। हज़रत इब्ने उम्र रज़ि से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। اَلظُّلْمَ ظُلُمَاتٌ يَوْمِ الْقِيَامَةَ (बुख़ारी तथा मुस्लिम)

अर्थात ज़ुल्म करना क़ियामत के दिन अन्धेरों का कारण होगा।

अत्याचारी को क़यामत के दिन हश्र के मैदान में तारीकीयां इस तरह घेरे हुए होंगी कि वह इस नूर से महरूम रहेगा जो जन्नतियों को नसीब होगा। अल्लाह तआला ने क़ुरआन में फ़रमाया।

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ

(अलहदीद:13) अर्थात जिस दिन तू मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को देखेगा कि उनका नूर उनके सामने भी और उनके दाएं तरफ़ भी भागता जाएगा (और ख़ुदा और इस के फ़रिश्ते कहेंगे) आज तुम्हें किस्म किस्म के बाग़ों की ख़ुश-ख़बरी दी जाती है (ऐसे बाग़) जिनके नीचे नहरें बहती होंगी ये (बिशारत पाने वाले) लोग इन जन्नतों में रहते चले जाऐंगे और यह बहुत बड़ी कामयाबी है

अगर इन्सान ख़ुदा तआला के बताए हुए नियम के अनुसार हर अन्धेरे से बचेगा तो उसे इस दुनिया में भी और परलोक में भी जन्नत अर्थात एक शान्ति वाली ज़िन्दगी नसीब होगी। इस बात की तरफ़ हमें सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने इस वर्ष के आरम्भ में ही ध्यान दिलाया था। जिस पर लोग और हुकूमतें यथा योग्य अनुकरण न करने के परिणाम स्वरूप आज करोना वाइरस जैसी कई मुसीबतों का शिकार हो चुके हैं। अत: हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फरमाते हैं।

"नया साल शुरू हुआ है। हम एक दूसरे को मुबारकबादें दे रहे हैं लेकिन अंधेरे गहरे होते चले जा रहे हैं। अत: इस साल के बरकतों वाला होने के लिए ज़रूरी है कि हम अल्लाह तआला के हुज़ूर यह

दुआ करें कि अल्लाह तआला इस साल को इस तरह बरकत वाला फ़रमाए कि दुनिया की हुकूमतें अपनी श्रेष्ठता साबित करने के लिए दुनिया को तबाही की तरफ़ न ले जाएं बल्कि दुनिया में शान्ति और न्याय स्थापित करने वाली हों। अपनी व्यकतिगत अहंकारों में पड़ कर अपने देश के स्वार्थों को हासिल करने के लिए इन्सानियत को तबाह करने के वाले न हों। अल्लाह तआला उनको बुद्धि दे। मुस्लमान देश हैं तो वे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम और मसीह मौऊद और महदी मौऊद के साथ जुड़ कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के झंडे को दुनिया में लहराने में सहायक बनें और ये लोग तौहीद को दुनिया में स्थापित करने वाले हों न कि मसीह मौऊद के विरोद्ध में इतने बढ़ जाएं कि अब तो इंतिहा कर दी है। अल्लाह तआला हमें भी तौफ़ीक़ दे कि हम पहले से बढ़कर ज़माना के इमाम को मानने का हक़ अदा करने वाले हों और यह हक़ अदा करते हुए दुनिया में तौहीद का झंडा लहराने वाले हों और दुनिया को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के झंडे के नीचे लाने वाले हों और इस के लिए अपनी समस्त सलाहियतों और संसाधनों को इस्तिमाल करने वाले हों।" (ख़ुतबा जुमा 3 जनवरी 2020 ई)

दुआ है कि अल्लाह तआला सारी दुनिया को रोशनी की तरफ़ आने और हम अहमदियों को भी अपने हुक़ूक़ अदा करने की दे। आमीन

हाफ़िज़ सय्यद रसूल नयाज़

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन

क़ुरआन करीम की शिक्षाओं को प्रचलित करना अन्सारुल्लाह की ज़िम्मेदारी

हम यक़ीनन बहुत बड़े ख़ुश-क़िस्मत हैं। जिन्हें क़ुरआन करीम जैसी महान किताब शरीयत के रूप में प्राप्त हुई है। क़ुरआन करीम ने ख़ुद अपने बारे में अपना परिचय इन शब्दों में प्रस्तुत किया है।

ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ فِيْهِ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ (अलबकर:3) अर्थात यह वह किताब है। इस में कोई शक नहीं। हिदायत देने वाली है मुत्तक़ियों को।

फिर फ़रमाता है اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَهْدِىْ لِلَّتِىْ هِىَ اَقْوَمُ وَ يُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا كَبِيْرًا (बनी इस्राईल10) निसन्देह यह क़ुरआन इस (मार्ग) की तरफ़ हिदायत देता है जो सबसे अधिक स्थापित रहने वाला है और उन मोमिनों को जो नेक काम करते हैं बिशारत देता है कि इन के लिए बहुत बड़ा बदला (निर्धारित) है।

क़ुरआन करीम शिफ़ा है और सब से बढ़कर अल्लाह तआला की रहमत है। जैसा कि फ़रमाता है। قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ (यूनुस 59)अर्थात तू कह दे कि (यह) केवल अल्लाह के फ़ज़ल और इस की रहमत से है। अत: इस पर चाहिए कि वह बहुत ख़ुश हों। वह इस से बेहतर है जो वे जमा करते हैं।

इस महान इलाही रहमत को जब मुस्लमानों ने पीठ दिखाई तो अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को क़ुरआन करीम की वास्तविक शिक्षा को दुनिया में फैलाने और इस्लाम की शरीयत को स्थापित करने के लिए मबऊस फ़रमाया है। यही कारण है कि क़ुरआन करीम की शिक्षा पर अनुकरण करने के लिए समस्त अहमदियों में चेतना पैदा करने के उद्देश्य से सारा वर्ष विभिन्न प्रोग्राम होते हैं। लेकिन एक विशेष ध्यान पैदा करने के लिए प्रत्येक वर्ष जुलाई में हफ़्ता क़ुरआन मजीद का प्रोग्राम अयोजित किया जाता है। चूँकि क़ुरआन करीम के बिना हम किसी प्रकार की नेकी तथा भलाई की आशा नहीं रख सकते। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि:

" क़ुरआन को छोड़कर सफलता एक असंभव और कठिन बात है। और ऐसी सफलता एक काल्पनिक बात है जिसकी तलाश में ये लोग लगे हुए हैं। सहाबा के नमूनों को अपने सामने रखो। देखो उन्होंने जब पैग़म्बर ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुकरण की और धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता दी तो वे सब वादे जो अल्लाह तआला ने उनसे किए थे पूरे हो गए। आरम्भ में मुख़ालिफ़ हंसी करते थे कि बाहर आज़ादी से निकल नहीं सकते और बादशाही के दावे करते हैं। लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

की इताअत में गुम हो कर वह पाया जो सदियों से उनके हिस्से में न आया था।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 409 अलहकम 31 जनवरी 1901 ई)

एक और अवसर पर फरमाते हैं कि

" मैं बार-बार कहता हूँ और बुलन्द आवाज़ से कहता हूँ कि क़ुरआन और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सच्ची मुहब्बत रखना और सच्चा अनुकरण धारण करना इन्सान को करामात वाला बना देता है।"

(ज़मीमा अन्जाम आथम रुहानी ख़ज़ायन भाग 11 पृष्ट 61)

अत: क़ुरआन करीम की शिक्षा सिखाने की ज़िम्मेदारी आज मज्लिस अन्सारुल्लाह के सपुर्द की गई है। घर के निगरान होने के कारण हर नासिर का फ़र्ज़ बनता है कि वह ख़ुद भी क़ुरआन करीम की शिक्षा प्राप्त करे और अपने घरवालों को भी सिखाए। इस ज़िम्मेदारी की तरफ़ ध्यान दिलाते हुए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फरमाते हैं।

" हर घर से तिलावत की आवाज़ आनी चाहिए। फिर अनुवाद पढ़ने की कोशिश भी करें। और सब ज़ैली तन्ज़ीमों को इस बारे में कोशिश करनी चाहिए, विशेष रूप से अन्सारुल्लाह को क्योंकि मेरे विचार में ख़िलाफ़त साल्सा के दौर में उनके ज़िम्मा यह काम लगाया गया था। इसी लिए उनके हाँ एक क़ियादत भी इस के लिए है जो तालीमुल क़ुरआन कहलाती है। अगर अन्सार पूरी ध्यान दें तो हर घर में नियमित क़ुरआन करीम पढ़ने और इस को समझने की क्लासें लग सकती हैं... क़ुरआन करीम की शिक्षा को प्रचलित करें, क़ुरआन करीम की तिलावत की तरफ़ ध्यान दें। घरों को भी इस नूर से प्रकाशित करें लेकिन अभी भी जहां तक मेरा अंदाज़ा है अन्सारुल्लाह भी 100 प्रतिशत क़ुरआन की तिलावत करने वाले नहीं हैं। अगर समीक्षा करें तो यही अवस्था सामने आएगी।"

(ख़ुत्बा जुमा 24 सितम्बर 2004 ई)

दुआ है कि अल्लाह तआला हमें भारत की समस्त मज्लिसों में एक विशेष मुहिम के अधीन इस तरफ़ विशेष ध्यान देने की तौफ़ीक़ प्रदान करे। आमीन।

अताउल मुजीब लोन

सदर मजलिस अन्सारुल्लाह भारत

❁❁❁

Mobile : 9572858090, 9955553631
NEW MOBILE POINT
TABASSUM FANCY STORE
Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

Cell : 09886083030
زبیر احمد شحنہ
ZUBER
Engineering Works
Body Building All Types of
Welding and Grill Works
HK Road - YADGIR-585201
Dist. Gulbarga - Karnataka

वर्तमान वैश्विक संकट और महामारियों की वास्तविकता- एक समीक्षा

{मुहम्मद अब्दुल बाक़ी, भूतपूर्व ऐडीशनल डिस्ट्रिक ऐंड सैशन जज)

अहमदिया मुस्लिम जमाअत के संस्थापक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम लोगों को सचेत करते हुए फ़रमाते हैं :

"जब थोड़ा से अज़ाब के चिन्ह प्रकट हों तो उस समय की तौबा स्वीकार होती है। इस लिए मैं बार-बार कहता हूँ कि अभी इस अज़ाब इलाही का दुनिया में केवल आरम्भ ही प्रकट हुआ है और इस का चरम और उत्तकर्ष बहुत ही सख़्त है अत: लोगों को चाहिए कि इस विशेष हलाकत के समय से पहले ख़ुदा की तरफ़ रुजू कर लें और ख़ुदा और रसूल और इमाम वक़्त की अज्ञापालन करें और तौबा तथा गुनाहों को छोड़ने दुआ एवं इस्तिग़फ़ार के साथ उस को दूर करें और अपने अंदर एक नेक तथा पवित्र तबदीली पैदा करें ताकि इस भयावह अज़ाब से सुरक्षित रहें।"

(हकीकतुल रुहानी ख़ज़ायन भाग 22 पृष्ठ 427)

जैसा कि हम जानते हैं कि अल्लाह तआला ने इन्सान के जन्म का उद्देश्य यह बताया है कि वह उस की इबादत करे। अल्लाह तआला फ़रमाता है। وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ (अज़्ज़ारियात 57) अर्थात और मैं ने जिन तथा इन्सान को केवल अपनी इबादत के लिए पैदा किया है। इसी बारे में अल्लाह तआला ने अपनी इबादत अर्थात नमाज़ को शुरू करने से पहले اِنِّیْ وَجَّهْتُ وَجْهِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِیْفًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ (अल-अनाम 80)पढ़ने का हुक्म दिया है

फिर अपनी हक़ीक़ी क़ुर्बानी से पहले इस बात का वर्णन करना ज़रूरी क़रार दिया है कि इस की नमाज़ ज़िन्दगी और मौत सिर्फ और सिर्फ अल्लाह तआला के लिए है। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है। قُلْ اِنَّ صَلَاتِیْ وَنُسُكِیْ وَمَحْیَایَ وَمَمَاتِیْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ (अल-अनाम163) अर्थात तू कह दे कि मेरी इबादत मेरी क़ुर्बानियां और मेरा जीना और मेरा मरना अल्लाह ही के लिए है। जो सारे संसारों का रब है। अल्लाह तआला क़ुरआन करीम में स्पष्ट रूप से यह भी फ़रमाता है कि वह अपना अज़ाब भेजने से पहले लोगों के सुधार और सृष्टि को होशियार करने के लिए अपना नबी भेजता है। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है। وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِیْنَ حَتّٰی نَبْعَثَ رَسُوْلًا (बनी इस्राईल 16) अर्थात हम हरगिज़ अज़ाब नहीं देते यहां तक कि कोई रसूल भेज दें।

इसी तरह अल्लाह तआला इन्सान को "हुक़ूक़ुल अल्लाह" और "हुक़ूक़ुल इबाद" को समझे और इस पर अनुकरण करे। सूरह निसा आयत 37 में इस बारे में विस्तार से वर्णन है।

सार यह कि इन्सान को अल्लाह तआला और इस के बंदे के सम्बन्ध से अलग अलग जो अधिकार दिए गए हैं। उसे चाहिए कि ईमानदारी और इन्साफ़ के साथ उन पर अनुकरण करे। लेकिन आज क्या हो रहा है?अधिकतर इन्सान अपने पैदा करने वाले सारे संसारों के रब्ब को भुलाकर, अपने दुनियावी आक़ा,अपने हाकिम,माँ बाप,बीवी बच्चों,अपने हाथों से बनाए गए बुतों, मज़ारों, ढोंगी साधू संतों,तथा कथित पीरों, बुज़ुर्गों इत्यादि की झूठी उपास्ना में व्यस्त हो कर अपने जन्म के प्रमुख उद्देश्यों को भूल गए हैं। और ख़ुदा तआला और उस के बंदों के सबन्ध से बताए गए अधिकारों को छोड़कर,अन्याय से और अपनी ताक़त और दौलत का प्रयोग करने में मस्त हैं।

अब वर्तमान अज़ाब इलाही (जो विभिन्न प्रकार की महामारियों के नाम से पुकारे जा रहे हैं और विभिन्न देशों के बीच जो अत्याचार फैला हुआ हैं) जिनमें करोना वाइरस,और तीसरे विश्व युद्ध की तैयारीयां भी शामिल हैं,उनके कारण क्या स्वंय इन्सान नही नहीं हैं? यह आज के युग में एक बहुत अहम और विचारणीय प्रशन है।

(1) सबसे पहले तो समस्त धर्मों के विद्वानों ने एक दूसरे के मज़हब के उपास्यों और नबियों और अवतारों की इज़्ज़त करने के स्थान पर उनका उपहास और ठट्ठा अपना पेशा बना लिया है और इस के साथ ही उसे आपस में नफ़रत फैलाने का माध्यम बना लिया है। जोकि उनकी धार्मिक शिक्षा के विरुद्ध है। इस बारे में कुर्आन करीम ने इन्सानों को स्पष्ट आदेश दिया है कि तुम मुश्रिकीन के उपास्यों को भी बुरा

भला मत कहो। और कारण यह बताया गया है कि अगर तुम ऐसा करोगे तो वे भी तुम्हारे ख़ुदा को बुरा भला कहेंगे बल्कि गालियां देंगे। अत: क़ुरआन करीम सूरह अल-अनाम आयत 109 में अपने अनुयायियों को दुनिया के समस्त धर्मों के संस्थापकों की इज़्ज़त करने का आदेश देता है।

(2) दूसरी बात यह एक कड़वी सच्चाई है कि आज दुनिया में शिर्क और बुत की उपास्ना बहुत अधिक की जा रही है। इस बारे में अल्लाह तआला क़ुरआन करीम में सूरह अन्निसा आयत 117 में स्पष्ट रूप से फ़रमाता है कि वह शिर्क और बुत परस्ती को छोड़कर अपने बंदों की बड़े से बड़े गुनाहों को बख़श देगा।

(3) तीसरा यह कि आज दुनिया एक बारूद के ढेर पर ही नहीं बैठी है बल्कि हम सब जानते और मानते हैं कि मौजूदा दौर में शिर्क, बुतपरस्ती और फ़ित्ना एवं फ़साद के साथ साथ इन्सान के बीच द्वैष की आग भी एक महामारी का रूप धारण कर चुकी और अपनी तबाही के कघार पर बैठी है। जिसमें आज दुनिया के अधिकतर देश शामिल हो चुके हैं। जिनमें भारत,पाकिस्तान,अमरीका,रूस,चीन, जापान, इंगलैंड,इराक़, ईरान,अफ़ग़ानिस्तान इत्यादि के नामों को जहां द्वैष,फ़ित्ना एवं फ़साद के साथ साथ शिर्क,और बुत परस्ती इत्यादि सीमा से ज़्यादा फैलती जा रही है। उनकी यह हालत किस अंजाम को पहुंचेगी ख़ुदा तआला ही बेहतर जानता है। आदमी आदमी से, समाज समाज से,देश देश से,अमीर ग़रीब से,मुस्लमान हिन्दु से और हिन्दु मुस्लमान से,मुस्लमान मुस्लमान से फ़िर्क़ों के नाम पर और हिन्दु हिन्दु से ज़ात पात के नाम पर,,काले गोरों से,और फिर आपस में सभी एक दूसरे से नफ़रत की आग में जल रहे हैं और उन के बीच ज़ुल्म, फ़ित्ना और फ़साद ज़ोरों पर जारी है।

सार यह है कि इन्सान के अंदर से प्यार तथा मुहब्बत, आपसी इन्सानी हमदर्दी मिटती चली जा रही है और इन्सान एक दृष्टि से हैवान से बुरा हो गया है।

ख़ुदा का नियम है,जिसके बारे में क़ुरआन करीम के हवाला मौलाना अबुल क़लाम आज़ाद साहिब मरहूम ने भी अपनी तफ़सीर तर्जुमानुल क़ुरआन में स्पष्ट रूप से लिखा है कि जब ऊपर वर्णित हालात पैदा हो जाते हैं तो ख़ुदा तआला इन्सान के सुधार के लिए अपना नबी भेजता है और यही आस्था हिन्दुओं और अन्य धर्मों की भी है। सभी धर्मों के विद्वानों का भी यह मानना है कि आज के समय में संसारके समस्त धर्मों की मूल शिक्षाओं का नाश हो चुका है। इस लिए ख़ुदा तआला की तरफ़ से नबी की ज़रूरत है। यह एक वास्तविकता है कि सभी धर्मों के लोग देखने सुनने और महसूस करने के बावजूद इन्सान अपने पैदा करने वाले रब की तरफ़ लौट नहीं रहे हैं।

ऊपर वर्णित समस्त हालतों के सम्मुख ही जमाअत अहमदिया के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह माहूद अलैहिस्सलाम ने आज से लगभघ एक सौ तीस साल पहले स्पष्ट तौर पर कहा था कि

वक़्त था वक़्त मसीहा न किसी और का वक़्त
मैं न आता तो कोई और ही आया होता

आप ख़ुदा तआला की तरफ़ से इस युग के इमाम के रूप में मबऊस किए गए हैं। आप का इन्कार ही वर्तमान हलाकत और तबाही का कारण है। आप अलैहिस्सलाम फरमाते हैं।

क्यों ग़ज़ब भड़का ख़ुदा का मुझसे पूछो ग़ाफ़िलो
इस के मूजिब हो गए मेरे झुटलाने के दिन

हम सब जानते हैं हैं कि क़ुरआन करीम की दृष्टि से ख़ुदा के नबी का इन्कार ख़ुद ख़ुदा तआला का इन्कार होता है। ऐसी अवस्था में अल्लाह तआला के मौजूदा किसी भी अवस्था में नाज़िल होने वाले अज़ाब की हक़ीक़त के विस्तार पूर्वक कारणों की यहां ज़रूरत नहीं है बल्कि उस की हक़ीक़त को जानने के लिए सिर्फ और सिर्फ ख़ुदा का ख़ौफ़ ,नेकी और तक़्वा के साथ साथ विनम्रता और विनय को समक्ष रखने की ज़रूरत है। इन हालात के सम्मुख ही एक शायर के शब्दों में यहां पर यही कहा जा सकता है

जिन चराग़ों से तास्सुब का धुआँ उठता हो
इन चराग़ों को बुझा दो कि उजाला हो जाएगा!

अब तस्वीर का दूसरा रुख़ जो आज मीडिया के द्वारा दुनिया के हालात देखने और सुनने को मिल रहे हैं ,इस के अनुसार ख़ुदा और इस के नबियों को मानने वाले और उन के इंकारी,क्या काले और क्या गोरे क़ौमों की सभी क़ौमों और उन के सभी वर्गों के लोग अपने कार्पनिक पैदा करने वाले के सामने,अपने सिरों को झुकाते,उनसे माफ़ी मांगते, उनकी पूजा करते और उन के सामने मजबूर और लाचार,ज़मीन के हर भाग में दिखाई दे रहे हैं और मीडियावाले इस सम्बन्ध से अपने अख़बारों,टीवी चैनलों ,व्हाट्स अप,फेसबुक इत्यादि

पर बड़ी बड़ी सुर्ख़ियाँ लगा रहे हैं। बेशक यह दूसरा रुख़ वक़्ती और बनावटी क्यों न हो,इन हालात के सम्मुख रखकर तो यही कहा जा सकता है।

जब दिया रंज बुतों ने तो याद खुदा आया

सार यह है कि मौजूदा तबाह करने वाले अज़ाबों और महामारी का मूल कारण इस के अतिरिक्त और कुछ नहीं कि लोगों ने दुनिया में होने वाली हलाकतों,तबाहियों से ख़ुदा का भय,नेकी ,तक़्वा और ईमानदारी नहीं सीखी और नसीहत नहीं पकड़ी। बल्कि उस के विपरीत अपने पैदा करने वाले रब और उस के नबियों और अवतारों और धर्म ग्रंथों की शिक्षाओं को अपनाने के स्थान पर उनका मज़ाक़ और ठट्ठा किया है और अधिकांश ने अपने बनाए हुए ख़ुदाओं की इबादात धारण कर ली है।

काफ़ी है सोचने को अगर अहल कोई है

दुनिया की वर्तमान हालात के सम्मुख लोगों की आगाही के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पेशगोइयों में से सिर्फ एक पेशगोई यहां पर पेश करना ज़रूरी समझता हूँ। आप अलैहिस्लाम हैं।

'' हे यूरोप तू भी अमन में नहीं और हे एशिया तू भी महफ़ूज़ नहीं। और हे द्वीपो के रहने वालो कोई मस्नूई ख़ुदा तुम्हारी मदद नहीं करेगा। मैं शहरों को गिरते देखता हूँ और आबादियों को वीरान पाता हूँ। वह अकेला ख़ुदा एक समय तक ख़ामोश रहा और इस की आँखों के सामने घृणित काम किए गए और वह चुप रहा मगर अब वह हैबत के साथ अपना चेहरा दिखलाएगा जिसके कान सुनने के हों सुने कि वह वक़्त दूर नहीं। ....मैं सच सच कहता हूँ कि इस देश की नौबत भी क़रीब आती जाती है नूह का ज़माना तुम्हारी आँखों के सामने आ जाएगा और लूत की ज़मीन का घटना तुम अपनी आंख़ों से ख़ुद देख लोगे। मगर ख़ुदा ग़ज़ब में धीमा है तौबा करो ताकि तुम पर रहम किया जाए जो ख़ुदा को छोड़ता है वह एक कीड़ा है न कि आदमी और जो इस से नहीं डरता वह मुर्दा है न ज़िन्दा।"

(हकीकतुल वह्य रुहानी ख़ज़ाइन भाग 22 पृष्ठ 269)

मौजूदा और आइन्दा नाज़िल होने वाले अज़ाब इलाही और महमारियों से बचने के लिए क़ुरआन करीम में अल्लाह तआला के बताए हुए नुस्ख़ा के अनुसार इन्सान का सच्चे दिल से अपने मौलाए हक़ीक़ी के सामने तौबा तथा इस्तिग़फ़ार के साथ दुआ के इलावा कोई ईलाज नहीं है। इस सम्बन्ध में हमारे मौजूदा ख़लीफ़ा बल्कि अपने ख़ुत्बों में बार-बार ध्यान दिला रहे हैं और तहरीक फ़र्मा रहे हैं और साथ ही लोगों को पिछली हलाकतों और तबाही से शिक्षा हासिल करने के बारे में नसीहत कर रहे हैं। आप फरमाते हैं कि

"अत: हमें इन हालात में भी जो आजकल इस माहामारी की वजह से हैं और हर एक इस से प्रभावित है.... हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि हमारे लिए दुआओं का रास्ता खुला है। हमें इस यक़ीन के साथ अल्लाह तआला के आगे झुकना चाहिए कि अल्लाह तआला ने हमारे लिए दुआओं का रास्ता खोला है और ख़ुदा तआला दुआएं सुनता है। अगर ख़ालिस हो कर उस के आगे झुका जाए तो वह स्वीकार करता है, किस रंग में क़बूल करता है यह वह बेहतर जानता है। उमूमी तौर पर अपने लिए, अपने प्यारों के लिए, अपने अज़ीज़ों के लिए, जमाअत के लिए और उमूमी तौर पर इन्सानियत के लिए दुआएं चाहिऐं। (ख़ुत्बा जुमा 10 अप्रैल 2020ई)

सिदक़ से मेरी तरफ़ आओ इसी ख़ैर है
हैं दरिंदे हरतरफ़ में आफ़ियत का हूँ हिसार

Mob: 9008510546
Akmal Tailor
Hill Road, Madikeri - 571201

Pants, Shirts & All Gents Wears Stitching Here

Maqbool Ahmed Cell : 9949310679
: 9949209561
Plant Medicine
Special Treatment for : Kidney Failure, Kidney Enlarge, Shrinkage, Kidney Gall Bladder Stone, Piles
H. No. 18-2-69/a, Jangammet, Falaknuma, Hyderabad - 53